प्रातः क्लास 11-4-68 ओमशान्ति "शिवबाबा याद है?"

****

ओमशान्ति। बच्चे बैठे हैं याद की यात्रा में। बेहद का बाप तो यात्रा में नहीं बैठते हैं। वह तो बच्चों को साकाश की मदद दे रहे हैं अर्थात शरीर को भूला रहे हैं। बाप की यह मदद मिलती है कि शरीर भूल जावे। अपनी साकाश देते हैं आत्माओं को। क्योंकि बाप देखते ही आत्माओं तरफ हैं। तुम हरेक की बुधि बाप के तरफ जाती है। बाप की बुधि वा दृष्टि फिर बच्चों तरफ जाती है। .....(डेड सायलेन्स)..... यह अभ्यास करते हो डेड सायलेन्स का। शरीर को छोड़ अलग होने चाहते हो। आत्मा समझती है कि जितना याद करते रहेंगे उतना ही शरीरसे निकलते जावेंगे। जैसे सर्प का मिशाल देते हैं। मिशाल जो देते हैं उस में जरूर कुछ रहस्य होते हैं। तुम जानते हो हम शरीर को छोड़ कर वापस चले जावेंगे और फिर आवेंगे। यह बातें और कोई नहीं जानते। कोई भी ऐसी गेरन्टी नहीं देते हैं कि इस याद से तुम्हारे विकर्म विनाश होंगे। ऐसी बात कोई भी सुनाते नहीं हैं। तुम बच्चे जानते हो हमारी अभी वापस जर्नी है। आत्मा का बुधि योग उस तरफ है। अभी नाटक पूरा हुआ। अभी घर जाना है। बाप को ही याद करना है। वही पतित-पावन है। गंगा को, पानी को तो लिबरेटर और गाईड नहीं कहेंगे। एक बाप ही लिबरेटर और गाईड हो सकता है। यह भी बड़ा समझने और समझाने की बातें हैं। वह तो है ही भक्ति। उन से कोई कल्याण नहीं हो सकता। बच्चे जानते हैं पानी तो नहान के लिए है। पानी कब पावन नहीं बना सकती। ऐसे भी नहीं भावना का भाड़ा मिल सकता है। भक्ति-मार्ग में उनका महत्व रख दिया है। इन सभी बातों को कहा जाता है अन्धश्रधा। ऐसी अन्धश्रधा रखते2 मनुष्यों को टाईटल मिल जाते हैं। अन्धे के औलाद अंधे। भगवानुवाच है ना। अंधे और सज़े यह भी तुम जानते हो। सारी सृष्टि के आदि मध्य अन्त को बाप ही जानते हैं। तुम बाप को भी जान गये हो और सृष्टि के आदि मध्य अन्त के डेक्युमेन्ट को भी जान गये हो। एक एक बात पर विचार सागर मथन करना है। अपना आपे ही फैसला करना है होता है। भक्ति और ज्ञान का कान्ट्रास्ट है। ज्ञान बिलकुल ही न्यारी चीज़ है। यह नालेज नागी,-ग्रामी है। राजयोग की पढ़ाई है ना। बच्चों को यह भी मालूम पड़ा है यह (देवतायें) सम्पूर्ण निर्विकारी थे। रचयिता बाप ही बैठ अपना परिचय देते हैं। वह है परम आत्मा। परम आत्मा को ही परमात्मा कहते हैं। अंग्रेजी में सुप्रीमसोल कहा जाता है। सोल अर्थात आत्मा। बाप की आत्मा कोई बड़ी न हीं होती है। बाप ही आत्मा भी ऐसी ही है जैसे तुम बच्चों की है। ऐसे नहीं बच्चे छोटे बाप बड़ा है। नहीं। वह सुप्रीम नालेज-फुल बाप बहुत ही प्यार से बच्चों को समझाते हैं। पार्ट बजाने वाली आत्मा है। जरूर शरीर धारण कर पार्ट बजावेंगी। आत्मा का रहने का स्थान शान्तिधाम है। बच्चे जानते हैं हम आत्मायें अण्डे ब्रहम महतत्व में रहती हैं। जैसे हिन्दुस्तान के रहने वाले अपन को हिन्दु कह देते हैं। वैसे ब्रहमाण्ड में रहने वाले भी फिर ब्रहम को ईश्वर समझ लेते हैं। ड्रामा में गिरने का उपाय भी नूंधा हुआ है। जानते ही नहीं तो वापस जा नहीं सकते। भल कोई कितनी भी मेहनत करे नाटक जब पूरा होता है तो सभी एक्टर्स आकर इकट्ठे होते हैं। क्रियटर, डाईरेक्टर मुख्य एक्टर्स सभी खड़े हो जाते हैं। बच्चे जानते हैं अभी यह नाटक पूरा होता है। यह बातें कोई भी साधु-सन्त आदि जान नहीं सकते। आत्मा की नालेज कोई को है नहीं। परमात्मा बाप यहां एक ही बार आते हैं। और सभी को तो यहां पार्ट बजाना ही है। शंकराचार्य को देखो बुधि होती रहती है ना। आत्मायें सभी कहां से आई। अगर कोईवापस जाता हो फिर तो वह रसम पड़ जाये। एक आवे दूसरा जावे। फिर उस में पुनर्जन्म कहा नहीं जाये। पुनर्जन्म तो शुरू से ही चलता है। पहले नम्बर में है यह ल०ना०। बाप ने समझाया है पुनर्जन्म लेते2 पिछाड़ी में जब आ जाते हैं तो फिर पहले नम्बर में जाना पड़ता है। इसमें संशय की कोई बात हो नहीं सकती। आत्माओं का बाप खुद आकर समझाते हैं। क्या समझाते हैं-अपना भी परिचय देते हैं। आगे पता था क्या कि परम आत्मा क्या चीज़ है। सिर्फ शिव के मंदिर में जाते थे। यहां तो ढेर के ढेर मंदिर है। सतयुग में मंदिर, पूजा आदि होती ही नहीं। वहां तुम पूज्य देवी-देवता बनते हो। फिर आधा कल्प बाद पुजारी बनते हो। तो उनको फिर देवी

देवता नहीं कहेंगे। फिर बाप आकर पूज्य बनाते हैं। और कोई देश में यह गायन नहीं है रामराज्य औ रावणराज्य। अभी तुम समझ गये हो रामराज्य का डेक्युशन कितना है, रावण राज्य का डेक्युशन कितना है। यहसिध करना चाहिए यहनाटक है। उनको समझना है। ऊंच ते ऊंच बाप है, वह भी नालेजफुल है। हम उन दवारा ऊंच ते ऊंच बनते हैं। ऊंच तें ऊंच पद मिलता है। बाप हमको पढ़ाते हैं। देवी गुण भी धारण करनी है। बच्चे वर्णन करते हैआप ऐसे हैं, हम ऐसे हैं। इस समय तुम जानते हो हमको इन जैसा सम्पूर्ण निर्विकारी बनना है। बाप को याद करने सिवाय और कोई उपाय नहीं। अगर कोई जानता हो तो बतावें। ऐसे थोड़े ही कहेंगे ब्रह्म वा तत्व निर्विकारी है। नहीं। आत्मा ही निर्विकारी बनती है। ब्रह्म वा तत्व को आत्मा नहीं कहा जाता। वह तो रहने का स्थान है। बच्चों को समझाया जाता है आत्मा में ही बुधि है। वह जब तमोप्रधान बन जाती है तो वैसमझ बन जाती है। समझदार और वैसमझ हैं ना। तुम्हारी बुधि कितनी स्वच्छ बनती है और फिर मलेच्छ होती है। अभी तुम बच्चों को पवित्रता और अपवित्रता का कान्ट्रास्ट का भी मालूम पड़ा है। अपवित्र आत्मा तो वापस जा नहीं सकती। अभी पवित्र कैसे बने इसके लिए रट्टी मारते रहते हैं। यह भी ड्रामा में नूंध है। अभी तुम जानते हो यह है संगम युग। बाप एक ही बार आते हैं। ले जाने लिए। सभी तो नई दुनिया में नहीं जाते हैं। जिनका पार्ट ही नहीं वह शान्तिधा-म में रहते हैं। इसलिए चित्र भी यह दिखाया है। बाकी और जो चित्र आदि हैं वह सभी भक्ति-मार्ग के हैं। यह है ज्ञान-मार्ग के। जिस से समझाया जाता है सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है। 84 की सीढ़ी तो बुधि में बैठ गई है ना। कैसे नीचे उतरते 2 14 कला, 12 कला बने हैं। अभी फिर कोई कला न रहा है। नम्बरवार तो है ना। एक्टर्स भी नम्बरवार आते हैं। कोई का वेतन हजार रुपया तो कोई का 1500 कोई का 100-150 कितना फर्क हो जाता है। पढ़ाई में भी कितना रातदिन का फर्क है। उस स्कूल में तो कोई नापास होता है तो फिर से पढ़ना पड़ता है। यहां तो फिर पढ़ने की बात ही नहीं। पद कम हो जाता है। फिर कब पढ़ाई होगी ही नहीं। एक बार ही पढ़ाई होता है। बाप भी एक बार आते हैं। बच्चे जानते हैं पहले 2 एक ही राजधानी थी। यह तुम किसको भी समझावेंगे तो मानेंगे। क्रिश्चन की बुधि पत्थर बुधि नहीं है जितनी यहां वालों की है। वह सुख भी कम तो दुःख भी कम पाते हैं। वह इन बातों को झट समझ सकेंगे। वह लोग तो सायंस में भी बड़े तेज हैं। और सभी इन्हों से ही सीखते हैं। उन्हों की न पारस बुधि न पत्थर बुधि होती है। इस समय उन्हों की बुधि कमाल कर रही है। सायंस का प्रचार सारा इन क्रिश्चन से ही निकला है। वह भी सुख के लिए ही है। तुम जानते हो इस पुरानी दुनिया का विनाश तो होना ही है। फिर तुम सुखधाम शान्ति धाम में चले जावेंगे। नहीं तो इनतेसभी मनुष्य आत्मायें वापस कैसे जावें। सायंस से विनाश हो जावेगा। सभी आत्मायें शरीर छोड़ कर घर चली जावेंगी। इस विनाश में मुक्ति अन्दर इर्मज है। आधा कल्प मुक्ति के लिए ही मेहनत करते आये हैं। तो सायंस और केमिस्ट्रीज जिसको खुदाई आपदायें कहते हैं यह भी होनीचाहिए। समझाना चाहिए सब लड़ाई निमित बनते हैं। मुक्तिधाम ले जाने लिए। भक्ति मार्ग में भी यज्ञ तप दान पुण्य आदि करते थे। भगवान पास अर्थात् ब्रह्ममुक्तिधाम जाने लिए। इस समय भी यह लड़ाई निमित बनी है। इतने सभी को मुक्तिधाम जाना है। तुम ने कितनी भी मेहनत की गुरु किये हठयोग सीखे कोई भी मुक्ति धाम जा न सके। इतने सायंस के गोले आदि तैयार होते हैं समझना चाहिए विनाश जरूर होगा। नईदुनिया में तो जरूर बहुत थोड़े ही होंगे। बाकी सभी मुक्ति धाम चले जावेंगे। जीवन मुक्ति में तो पढ़ाई के की ताकत से आते हैं। तुम अटल अखण्ड अडोल राज्य करते हो। यहां तो देखो सभी खण्ड के टुकड़े 2 हो गये हैं। बाप तुमको अटल अखण्ड सारे विश्व की राजधानी का मालिक बनाते हैं। अथवा वर्सा देते हैं। बेहद के बाप से बेहद की बादशाही बेहद का वर्सा। यह वर्सा कब किसने दिया यह कोई की बुधि में कब नहीं बैठता। सिर्फ तुम ही जानते हो। ज्ञान का तीसरा नेत्र आत्मा को ही मिला है।

आत्मा ज्ञान स्वरूप ज्ञान का सागर है। ज्ञान का सागर बाप से ही बनना पड़ेगा। बाप ही आकर रचयिता और रचना के आदि मध्य अन्त का नालेज देते हैं। यह भी है सेकण्ड की बात। सेकण्ड में जीवनमुक्ति। सभी को मुक्ति मिलती है। सभी तो जीवन मुक्ति में आ न सके। यह भी ड्रामा बना हुआ है। रावण के बन्धन से सभी मुक्त हो जाते हैं। वह लोग तो विश्व में शान्ति के लिए कितनी मेहनत करते हैं। यह सिर्फ तुम बच्चे ही जानते हो कि विश्व में और ब्रह्माण्ड में शान्ति कब होती है। ब्रह्माण्ड में शान्ति कहा जाता है फिर विश्व में सुख और शान्ति दोनो ही रहती है। विश्व अलग है, ब्रह्माण्ड अलग है। चांद सितारों से परे ब्रह्माण्ड। वहां यह कुछ भी रहती नहीं उनको कहा जाता है सायलेन्स वर्ल्ड। शरीर छोड़ कर सायलेन्स में चले जावेंगे। तुम बच्चों को वह भी याद है। तुम इस समय वहां जाने की तैयारी कर रहे हो। और कोई जानते ही नहीं। तुमको तैयारी कराई जाती है। बाकी भी लड़ाई तो निमित है। सभी का हिसाब किताब चुकुत होना है। सभी पवित्र बन जावेंगे। योग अग्नि है ना। अग्नि से तो हर चीज पवित्र होते हैं।

जैसे बाप ड्रामा के आदि मध्य अन्त को जानते हैं वैसे तुम एक्टर्स भी को भी ड्रामा के आदिमध्य अन्त को भी जानना है। जानने को ही सा० कहा जाता है। अभी तुम्हारा ज्ञान का तीसरा नेत्र खुला है। वैसे हम सारे विश्व को सतयुग से लेकर कलियुग अन्त तक पूरा जान चुके हैं। दुसरा कोई भी मनुष्य नहीं जानते। तुम समझते हो जो गुणोवाले थे वही फिर आसुरी गुणों वाला बनते हैं फिर बाप आकर देवी गुणों वाला बनाते हैं। बाप आते ही पतितों को पावन बनाने। पूरा पतित और पूरा पावन। दुनिया में और कोई को यह पता नहीं है कि येह देवतायें घराने वाले ही पूरे 84 जन्मलेने वाले हैं। पतित भी तो पावन भी बनते हैं। यह और किसकी बुधि में नहीं है। तुम अभी समझते हो यह तो जड़ चित्र है। स्प्युरेट कोई उन्हों का तो निकल न सके। वह तो नेचरल चैतन्य गोरे हैं। पवित्र प्रकृति से शरीर भी पवित्र बनते हैं। यहां तो अपवित्र है। यह रंग-बिरंगी दुनिया सतयुग मे नहीं होती। कृष्ण को कहा जाता है श्याम-सुन्दर। सतयुग में है सुन्दर। कलियुग में सुन्दर श्याम। सतयुग से कलियुग में कैसे बनते हैं, तुमको नम्बरवन से लेकर मालूम पड़ा है। कृष्ण तो गर्भ से निकला और नाम मिला। नाम तो जरूर चाहिए ना। तो कहेंगे कृष्ण की आत्मा सुन्दर थी। फिर श्याम बनी। इसलिए श्याम सुन्दर कहा जाता है। उनकी जन्मपत्री मिल गई तो सारे चक्र की मिल गई। कितना रहस्य भरा हुआ है। जिसको तुम ही समझते हो। और कोई नहीं जानते। तुमको अभी नई दुनिया नये घर मे जाना होता है। जो अच्छी रीत पढ़ते हैं पढ़ाते हैं वे ही नईदुनिया में जावेंगे। यह श्री (ल०ना०) बिलकुल नई दुनिया के मालिक हैं ना। दुनिया के कोई के भी बुधि में यह बातें नहीं है। क्योंकि लाखों वर्ष कह दिया है। और फिर परमात्मा को ठिकर भितर में डाल दिया है। ठिकर भितर में कब आत्मा हो सकती है क्या। कितनी मुर्खता है। उनकी फिर एक नाटक भी दिखाते हैं कण2 में भगवान। इसको ही ग्लानी कहा जाता है। पत्थर बुधि बननेसे उनको भी पत्थर बना दिया है। इसलिए बाप कहते हैं यदा यदा ही धर्मस्य ... मनुष्य कितना घोर अंधियारे में हैं। भक्ति को कहा ही जाता है अज्ञान। ज्ञान का सागर तो एक ही बाप है। बाकी है भक्ति। फिर भक्ति वाली दुनिया का वैराग्य। बाप ज्ञान देते हैं जिससे हम आधा कल्प सुखी रहते हैं। फिर भक्ति में धक्का खाना होता है। वहां तो यह शास्त्र आदि होते ही नहीं। भक्ति पूरी होने बाद ही वैराग्य। सन्यासियों को फिर भक्ति के बीच में ही वैराग्य हो जाता है। घर बार छोड़ फिर भी इसी दुनिया में ही रहते हैं। तुम बेहद का सन्यास करते हो। वह है हद का सन्यास। तुम्हारा है बेहद का। बाबा है बेहद के सारी दुनिया का मालिक। सभी आत्माओं का बाप। बाप को अकाल मालिक कहा जाता है। फखावाद तरफ मालिक को मानते हैं। घर का मालिक तो बाप ही होता है। बच्चों को बच्चे ही कहेंगे। जब वह भी बड़े होते हैं। बच्चे पैदा करते हैं तब फिर मालिक बनते हैं। यह सभी राज समझने की है। यह पढ़ाई है। इसमें कोई संशय वा प्रश्न नहीं उठ सकता। इसमें शास्त्रावाद करने की भी दरकार नहीं। एक ही टीचर सब से ऊंचा है। वह बैठ कर

पढ़ाते हैं। वह ही ह सत्य है। सत्य नारायण की सच्ची ब शिक्षा देते हैं। जो फिर कथा के रूप में चलती है। उन भक्ति मार्ग के कथाओं में मनुष्यों का भाव कितनारहता है। अभी तो उन कथाओं आद की भी इतना प्रभाव आद न रहा है। नहीं तो बहुत वर्त नेम आद रखते थे। सत्य ना० अर्थात नर से नारायण बनने की यह नालेज है। जिसका फिर भक्ति मार्ग में महत्व चलता है। पवित्र आत्मा और पूण्यात्मा कहा जाता है। यह हैं पवित्र आत्मायें। पूण्यात्मा क्यों कहते हैं क्योंकि बाप को तन मन धन से सभी स्वहा करते हैं। तो पूण्यात्मा कहा जाता है। अपवित्र आत्मा से पवित्र आत्मा बनेंगे योगबल से। इसमें दान पूण्य आद की बात ही नहीं। यह योग की बात है। भारत का योग मशहुर है। सारे विश्व को बाप हेविन बनाते हैं। इसलिए उनको याद भी करते रहते हैं। कि आकर हमको गाईड करो। आगे मूज़ बनाते थे। फिर जब उसमें मनुष्य मुंझ जाते हैं तो चीलाते हैं। इन से हमको निकालो। मंदिरों मे भी कितना चिल्लाते हैं। क्यों कि सभी मुंझे हुये हैं। सुखधाम शान्तिधाम का गेट मिलता ही नहीं हैं। तो चिल्लाते रहते हैं। तो कितने मेले मलाखड़े लगते हैं। इसको तो कहा जाता है संगम युग। कुम्भ का मेला अद वह सभी हैं भक्ति मार्ग की बातें। यह है आत्माओं और परमात्मा का मेला। उन में लौ मो तोमिले बन पड़ते हैं। बाप तो बच्चों आकर बिलकुल स्वच्छ बनाते हैं। एक श्याम सुन्दर थोड़े ही होंगा। श्याम सुन्दर का अर्थ ही देखो कैसा है। पुरानी दुनिया को लात मारते हैं। और नई दुनिया में हैं। अभी तुम्हारा सिर है स्वर्ग तरफ। लात है नर्क तरफ। हम अभी शिवालय मे जाते हैं टांगें वेश्यालस तरफ है। हम शिवालय में जाते हैं बाया शान्तिधाम। सिर इस तरफ है। चित्र कर के एक का दिखाया है यह तो बहुत सहज समझने की बातें हैं। मनुष्य कहेंगे यह फिर क्या है तुम तो इनका अर्थ जानते हो ना। जो बनाते हैं वही जानते हैं। भक्ति मार्ग मे चित्र बनाने वालों से अर्थ पूछो तो कुछ भी भी बतावेंगे। तुम तो सभी समझते हो। इसको कहा जाता है ईश्वरीय पढ़ाई। निराकार ईश्वर पढ़ावेंगे कैसे। इसलिए कृष्ण का नाम डाल दिया है। तुम बच्चे सिर्फ यह याद करोतो अभीसिर हमारा स्वर्ग तरफ, पैर नर्क तरफ है। तो भी मन्मनाभव हो जाये। यह है रथ। और वह है बाप। यह ज्ञान तुमको बाप देते हैं। न कि रथ। इन रथ का कोई गुरु नहीं है जिसने इनको सिखाया। नहीं तो गुरु होता तो फिर अनेक सीख पड़ते। ऐसे नहीं कि इनको यह ज्ञान किस गुरु से मिला है। नहीं। यह ज्ञान देते ही बाप है। यह तो सिर्फ रथ है। अच्छा मीठे2 बच्चों को बाप दादा का याद प्यार गुडमार्निंग और नमस्ते।

पिकनीक 10-4-68 बुधवार

बच्चे यह तो जानते हैं हमारा बाप टीचर गुरु एक ही है। सदगुरु कहते हैं मामेकं याद करो। दुनिया में गुरु तो अनेक हैं। क्योंकि स्त्री के लिए पति गुरु ईश्वर कहलाते हैं। अंगियाला बांधते हैं तो कहते हैं ना पति ही तुम्हारा ईश्वर गुरु है। गुरु तो लाखों हैं। सदगुरु एक ही है। कहते हैं सदगुरु अकाल... जिसको कोई काल नहीं खा सकता। तुमको वहां काल नहीं खाते हैं। तो जब तुम पिकनीक करते हो किसके साथ जो ऊंच ते ऊंच बाप भी है और शिक्षक भी है। सृष्टि के आदि मध्य अन्त का राज भी बतलाते फिर सुखधाम शान्तिधाम साथ में ले जाने वाला भी हैं। तो ऐसे बाप कहते हैं मुझे याद करो तो तुम्हारे पाप जन्म जन्मान्तर के कट जावेंगे। पाप कोई एक जन्म का तो नहीं है ना। जन्म जन्मान्तर का पाप सिर पर है। यह बाप तो बेस्टी करते हैं तुम्हारे जन्म जन्मान्तर के पाप कट जावेंगे अगर श्रीमत पर चलेंगे तो। और तुम सुखधाम शान्तिधाम के भी मालिक बन जावेंगे। तो बाप ही सुखधाम शान्तिधाम के गेट खुल खोलते हैं। बाप ही स्वर्ग के उद्घाटन करते हैं। तो तुम बच्चों को कितनी खुशी होनी चाहिए। हम श्रीमत से ही श्रेष्ठ से बनते हैं। अभी तुम ईश्वरीय दरबार मे पिकनीक रहे हो। अभी तुम अपने को आत्मा समझ ईश्वर के दरबार में बैठे हो। तो तुम्हारी कितनी लागू लाईफ बनती है। बच्चे भी बाप को याद कर विकर्मों पर जीत पाते हैं तिसने विकर्माजीत राजा बनते हैं। सतयुग में विकर्माजीत डिनायस्टीफिर होते हैं विकर्मासम्वत। ओम।